University of Technology
Serving Education Since 1976

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 22, अक्टूबर 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार,

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 22 को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, शोध एवं नवाचार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 निरंतर सीखने, सृजन और उपलब्धियों की दिशा में आगे बढ़ रहा है। आज के बदलते परिवेश में शिक्षा के साथ अनुसंधान, नवाचार, कौशल विकास और रचनात्मक चिंतन का विशेष महत्व है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि विद्यार्थी अपने ज्ञान और प्रतिभा का उपयोग समाज एवं राष्ट्र के विकास में करें। विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, शोध गतिविधियों तथा सह-पाठ्यचर्या कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता उनके सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षकों का मार्गदर्शन और विद्यार्थियों का उत्साह मिलकर एक सशक्त शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करते हैं। मुझे विश्वास है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' का यह अंक सभी पाठकों को नई ऊर्जा, सकारात्मक सोच और निरंतर उत्कृष्टता की प्रेरणा प्रदान करेगा। आइए, हम सभी ज्ञान, अनुशासन, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल्यों को अपनाते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति में अपना योगदान देने का संकल्प लें।

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार,

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 22 के प्रकाशन पर समस्त विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, शोध, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नवाचार एवं विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को साझा करने का महत्वपूर्ण मंच बन चुकी है। शैक्षणिक सत्र 2026–27 निरंतर उत्साह और नई उपलब्धियों के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास, कौशल निर्माण, नेतृत्व क्षमता और रचनात्मक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्राप्त हों। बदलते समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को व्यावहारिक ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार से जोड़ना आवश्यक है। हमारा लक्ष्य विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन, तार्किक चिंतन और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करना है, ताकि वे अपने ज्ञान और प्रतिभा का उपयोग समाज तथा राष्ट्र के विकास में कर सकें। विश्वविद्यालय में आयोजित शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मुझे विश्वास है कि विद्यार्थी अपने परिश्रम, प्रतिभा और सकारात्मक दृष्टिकोण से विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को नई ऊँचाइयों तक ले जाएंगे। 'परिसर प्रतिध्वनि' इसी सामूहिक प्रयास और रचनात्मक ऊर्जा को अभिव्यक्ति प्रदान कर रही है। अंक 22 के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आइए, हम सभी ज्ञान, अनुशासन, सहयोग और उत्कृष्टता की भावना के साथ विश्वविद्यालय की प्रगति तथा समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने का संकल्प लें।

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

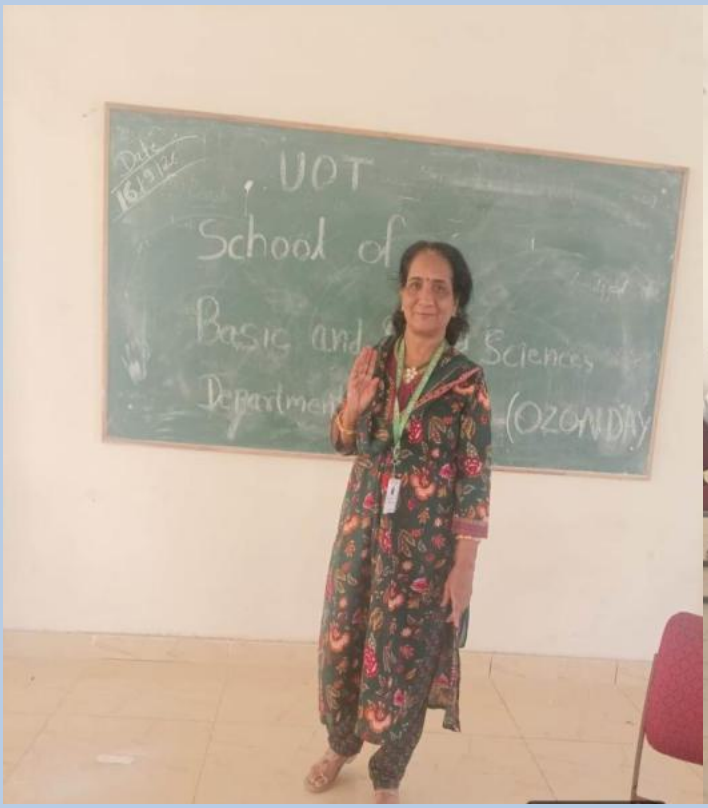
‘परिसर प्रतिध्वनि’ का प्रत्येक अंक विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, शोध एवं नवाचार, सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक अभिरुचियों तथा विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करता है। इसी निरंतर यात्रा में ‘परिसर प्रतिध्वनि’ का अंक 22 विश्वविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों, उपलब्धियों और सक्रिय सहभागिता को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। प्रत्येक अंक नई गतिविधियों, विचारों और अनुभवों को संजोते हुए विश्वविद्यालय के जीवंत वातावरण की झलक प्रस्तुत करता है। शिक्षा निरंतर सीखने, समझने और स्वयं को बेहतर बनाने की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि उनमें तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आत्मविश्वास, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी है। वर्तमान समय में तेजी से बदलती तकनीक, डिजिटल माध्यमों और नए ज्ञान क्षेत्रों ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक बनाया है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 अपने निरंतर विस्तार के साथ विश्वविद्यालय परिसर में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार कर रहा है। कक्षा-कक्ष की शिक्षा के साथ संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, शोध गतिविधियाँ, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद तथा विभिन्न सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को विकसित करने का अवसर प्रदान करती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से उनमें संवाद क्षमता, नेतृत्व, सहयोग की भावना और निर्णय लेने का आत्मविश्वास विकसित होता है। विश्वविद्यालय की प्रगति केवल उसकी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उस वातावरण से भी निर्धारित होती है जहाँ ज्ञान के साथ जिज्ञासा, प्रतिभा के साथ अवसर और अधिकार के साथ उत्तरदायित्व का विकास हो। हमारा सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि विद्यार्थियों को ऐसे अवसर उपलब्ध हों, जिनके माध्यम से वे अपनी क्षमताओं को पहचानें, नए विचारों पर कार्य करें और अपने ज्ञान एवं कौशल को समाज के हित में उपयोग कर सकें। इस अंक को सार्थक स्वरूप प्रदान करने में सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा संपादकीय मंडल के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। आपकी सक्रिय सहभागिता, रचनात्मक अभिव्यक्ति और निरंतर सहयोग ही ‘परिसर प्रतिध्वनि’ की शक्ति है। आइए, हम सभी ज्ञान को अपनी शक्ति, नवाचार को अपनी प्रेरणा, अनुशासन को अपना आधार और सामाजिक संवेदनशीलता को अपना संस्कार बनाते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति तथा एक सशक्त, जागरूक और प्रगतिशील समाज के निर्माण में अपनी सार्थक भूमिका निभाने का संकल्प लें।

डॉ. प्रेम कुमार
संपादक, परिसर प्रतिध्वनि
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट: आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

ओजोन दिवस पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पर्यावरणीय प्रभाव पर वाद-विवाद आयोजित

दिनांक 16 सितंबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज द्वारा ओजोन दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं के लिए एक विभागीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद-विवाद का विषय 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता: पर्यावरण के लिए उपयोगी एवं हानिकारक' रखा गया। कार्यक्रम में डॉ. रजनी माथुर, डीन, स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए ओजोन परत के संरक्षण तथा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार तकनीकी उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने और अपनी दैनिक गतिविधियों में सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर डॉ. चारु दुबे, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। वहीं सुश्री मनीषा यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान ने सतत तकनीकी विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया।





वाद-विवाद प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पर्यावरण पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने पर्यावरणीय निगरानी, जलवायु एवं संसाधन प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में एआई (AI) की उपयोगिता के साथ-साथ इसके लिए आवश्यक अधिक ऊर्जा खपत, कार्बन फुटप्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों पर भी चर्चा की। कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को अपने विचारों को तार्किक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के साथ-साथ आधुनिक तकनीक और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन को समझने का अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम का समापन विद्यार्थियों को सतत जीवनशैली अपनाने, ओजोन परत के संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय योगदान देने के संदेश के साथ हुआ।

तीन दिवसीय 'यूथ मेंटल हेल्थ फर्स्ट एड' प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास विज्ञान विभाग द्वारा विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता तथा आवश्यकता पड़ने पर उचित सहायता प्रदान करने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से 17 से 19 सितंबर 2026 तक तीन दिवसीय 'यूथ मेंटल हेल्थ फर्स्ट एड' प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से चयनित 25 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का समन्वय विशेष शिक्षा विभाग की अधिष्ठाता डॉ. वंदना सिंह ठाकुर द्वारा किया गया, जबकि सुश्री सीमा चौधरी एवं श्री धीरज कुमार नागर सह-समन्वयक रहे। प्रशिक्षण के लिए आदित्य बिरला एजुकेशन ट्रस्ट, मुंबई से सुश्री तुर्शल वेडवॉकर को प्रशिक्षिका के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिवस का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं अतिथि सत्कार के साथ हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की अध्यक्ष डॉ. रश्मि जैन ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए यूथ मेंटल हेल्थ फर्स्ट एड कार्यक्रम के उद्देश्य एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य को युवाओं के समग्र विकास का महत्वपूर्ण आधार बताते हुए विद्यार्थियों को प्रशिक्षण से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने मानसिक स्वास्थ्य एवं मानवीय संवेदनशीलता से जुड़े महत्वपूर्ण प्रसंगों के माध्यम से विद्यार्थियों को संबोधित किया। उनके संबोधन ने विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित परिस्थितियों को संवेदनशीलता एवं सहानुभूति के साथ समझने के लिए प्रेरित किया।





प्रशिक्षण के प्रथम दिवस 17 सितंबर 2026 को प्रशिक्षिका सुश्री तुर्शल वेडवॉकर ने 'अवसाद' विषय पर विस्तृत एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। विद्यार्थियों को अवसाद का अर्थ, उसके प्रमुख लक्षणों एवं पहचान के तरीकों तथा अवसाद से प्रभावित व्यक्ति को उचित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के महत्वपूर्ण तरीकों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण को प्रभावी एवं सहभागितापूर्ण बनाने के लिए विभिन्न गतिविधियों, वीडियो प्रस्तुतियों एवं वास्तविक जीवन से जुड़े उदाहरणों का प्रयोग किया गया। विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया। 18 सितंबर 2026 को प्रशिक्षण के दूसरे दिवस "चिंता (एंग्जायटी)" विषय पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। प्रशिक्षिका द्वारा चिंता के विभिन्न स्वरूपों, इसके संकेतों तथा व्यक्ति के व्यवहार एवं दैनिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान विद्यार्थियों की

सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ, उदाहरण एवं वीडियो प्रस्तुत किए गए। प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर मिला कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को समय रहते पहचानना और संवेदनशीलता के साथ सहायता प्रदान करना कितना महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के अंतिम दिवस 19 सितंबर 2026 को मनोविकृति (साइकोसिस) एवं पदार्थ दुरुपयोग (सब्सटेंस मिसयूज़) जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षिका ने इन विषयों से संबंधित आवश्यक जानकारी, संकेतों तथा ऐसे मामलों में व्यक्ति के प्रति अपनाए जाने वाले संवेदनशील एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा की। तीन दिनों तक चले इस प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी परिस्थितियों को समझने, पहचानने, उचित प्रतिक्रिया देने तथा आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति को सही सहायता एवं संसाधनों तक पहुँचाने की दिशा में व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं अनुभवात्मक रहा।

शायद यही प्यार है

(कविता)

तुमसे मिलने से पहले
मैंने प्यार को बस किताबों में पढ़ा था,
जहाँ कोई चाँद के नीचे
किसी का हाथ पकड़कर कहता था
"तुम मेरे लिए खास हो।"
फिर तुम मिली…
और समझ आया,
प्यार हमेशा कहा नहीं जाता,
कभी-कभी बस महसूस होता है।
तुम्हारा वो बिना वजह मुस्कुराना,
मेरी छोटी-सी बात पर हँस देना,
भीड़ में भी मुझे देखकर
एक पल के लिए ठहर जाना
पता नहीं क्यों,
ये छोटी-छोटी बातें
मेरे पूरे दिन की खुशी बन जाती हैं।
मैं तुम्हें चाँद नहीं ला सकता,
क्योंकि वो मेरा है ही नहीं…
सितारे भी नहीं तोड़ सकता,
क्योंकि आसमान से उनका रिश्ता पुराना है।
हाँ, इतना ज़रूर कर सकता हूँ
जब तुम्हारी आँखों में आँसू हों,
तो तुम्हारे पास बैठ सकूँ,
जब नया तुम समझ न पाओ,
तो तुम्हारी बात सुन सकूँ,
और जब तुम खुश हो…
तो तुम्हारी खुशी में
बिना किसी वजह के मुस्कुरा सकूँ।
शायद प्यार का मतलब
किसी को अपना बना लेना नहीं है,
बल्कि किसी के साथ रहते हुए
उसे उसके तरह रहने देना है।
और अगर कभी तुम पूछो मुझसे
"आख़िर मुझमें ऐसा क्या है?"
तो शायद मैं कुछ कह न पाऊँ…
बस इतना कहूँगा—
"तुम्हारे आने के बाद
मेरी ज़िंदगी बदली नहीं है…
बस वही ज़िंदगी
पहले से थोड़ी ज़्यादा खूबसूरत लगने लगी है।

रौनक स्वामी
बीएससी द्वितीय वर्ष

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास विज्ञान विभाग द्वारा विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस के अवसर पर 21 सितंबर 2026 को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. वंदना सिंह ठाकुर, अधिष्ठाता, विशेष शिक्षा विभाग के समन्वय तथा सीमा चौधरी, सहायक आचार्य, विशेष शिक्षा विभाग के सह-समन्वय में किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने पोस्टरों के माध्यम से आत्महत्या रोकथाम, मानसिक स्वास्थ्य, सकारात्मक सोच, भावनात्मक सहयोग एवं जीवन के प्रति आशा से संबंधित अपने रचनात्मक विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की रचनात्मकता के साथ-साथ सामाजिक संवेदनशीलता और जागरूकता का भी प्रभावी प्रदर्शन देखने को मिला। पोस्टर प्रतियोगिता के मुख्य निर्णायक मंडल में डॉ. रश्मि जैन (प्रेसिडेंट), डॉ. अंकित गांधी (प्रो-प्रेसिडेंट) तथा डॉ. रोहित सारस्वत (अधिष्ठाता- रिसर्च विभाग) शामिल रहे। निर्णायक मंडल द्वारा विद्यार्थियों के पोस्टरों का विषय-वस्तु, रचनात्मकता, संदेश की प्रभावशीलता एवं प्रस्तुतीकरण के आधार पर मूल्यांकन किया गया प्रतियोगिता में प्रथम स्थान डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर की छात्रा तनीषा मीणा, द्वितीय स्थान डिपार्टमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चर के छात्र कृष्णा व बेसिक एंड अप्लाइड साइंस विभाग की छात्रा रिहान आफरीन ने जबकि तृतीय स्थान विशेष शिक्षा विभाग की छात्रा प्रिया चौधरी व डिपार्टमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चर के छात्र संदीप जोरवाल ने प्राप्त किया। विजेता विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।





कार्यक्रम के अंत में डॉ. वंदना सिंह ठाकुर, अधिष्ठाता, विशेष शिक्षा विभाग ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर खुलकर संवाद करना आवश्यक है तथा विद्यार्थियों में संवेदनशीलता और सहयोग की भावना विकसित की जानी चाहिए। डॉ. अंकित गांधी, प्रो-प्रेसिडेंट ने कहा कि सकारात्मक सोच, संवाद और आपसी सहयोग मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं तथा विद्यार्थियों को आवश्यकता के समय एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। डॉ. रश्मि जैन, प्रेसिडेंट ने विद्यार्थियों की सहभागिता की सराहना करते हुए कहा कि मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के साथ सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित करना भी आवश्यक है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा एवं रचनात्मक सोच का प्रदर्शन किया। विशेष रूप से नए विद्यार्थियों के रचनात्मक कार्यों एवं विचारों को प्रोत्साहित किया गया तथा उनकी प्रतिभा की सराहना की गई। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विशेष शिक्षा विभाग के धीरज कुमार नागर, सुश्री गीता रानी, श्री हसन दीन खान, श्री मनीष कुमार मीणा सहित ह्यूमैनिटीज आर्ट एंड सोशल साइंसेज के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार की उपस्थिति एवं सहभागिता सराहनीय रही।

विश्व फार्मासिस्ट दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

फार्मेसी विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में विश्व फार्मासिस्ट दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस वर्ष की थीम 'स्वस्थ भविष्य के लिए फार्मासिस्टों को सशक्त बनाना' रही। इस दिन फार्मेसी विभाग द्वारा रैली, पोस्टर प्रेजेंटेशन, निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं कैरम, चेस, बैडमिंटन, क्रिकेट जैसी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजेताओं को शील्ड देकर सम्मानित किया गया। मुख्य कार्यक्रम सेमिनार हॉल-1 में आयोजित हुआ, जहाँ प्राचार्य डॉ. राम गर्ग द्वारा छात्र-छात्राओं को फार्मासिस्ट शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने सभी छात्र-छात्राओं को विश्व फार्मासिस्ट दिवस का महत्व समझाया और बताया कि स्वस्थ भविष्य के लिए फार्मासिस्ट कितने महत्वपूर्ण हैं।





प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने डॉक्टर और फार्मासिस्ट के मध्य के संबंध को विस्तार से समझाया। प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने कोरोना काल में वैक्सीन उपलब्ध कराने में फार्मासिस्टों के महत्वपूर्ण योगदान को बताया। रजिस्ट्रार डॉ. अनूप शर्मा ने फार्मासिस्टों के लिए ज्ञान, कौशल और तकनीकी क्षमता के महत्व पर प्रकाश डाला। इस दौरान शोध अधिष्ठाता डॉ. रोहित सारस्वत ने विद्यार्थियों को भारत में जेनेरिक दवाओं के विशाल बाजार और उसके भविष्य के अवसरों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में फार्मेसी विभाग के समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

विश्वविद्यालय में अंतरविभागीय खेल प्रतियोगिता हुई सम्पन्न

दिनांक 25-26 सितंबर को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में आयोजित दो दिवसीय इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी खेल प्रतिभा, अनुशासन तथा प्रतिस्पर्धात्मक भावना का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के दूसरे दिन वॉलीबॉल, टेबल टेनिस, कैरम और शतरंज के सेमीफाइनल एवं फाइनल मुकाबले आयोजित किए गए। सभी खेलों में खिलाड़ियों के बीच रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ अपने-अपने विभाग का प्रतिनिधित्व किया। इस अवसर पर प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण एवं व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन, टीम भावना, समर्पण और सकारात्मक सोच के साथ खेलों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।





प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने सभी विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को बधाई देते हुए विद्यार्थियों को भविष्य में भी खेल गतिविधियों में निरंतर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि खेल विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, टीमवर्क और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों की सराहना की और उन्हें भविष्य में भी खेल गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। खेल प्रबंधक श्री यश यादव ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन पर सभी खिलाड़ियों एवं सहयोगी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। वॉलीबॉल के फाइनल मुकाबले में मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब अपने नाम किया, वहीं फ़ार्मेसी विभाग की टीम उपविजेता रही। शतरंज प्रतियोगिता में उत्तम राम, कृषि विभाग ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब अपने नाम किया। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों ने अपनी रणनीति, एकाग्रता, धैर्य और निर्णय क्षमता का शानदार परिचय दिया। शतरंज के मुकाबलों में खिलाड़ियों ने प्रत्येक चाल को सोच-समझकर खेलते हुए अपनी रणनीतिक क्षमता का प्रदर्शन किया। दो दिवसीय इंटर-डिपार्टमेंट स्पोर्ट्स प्रतियोगिता ने यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में खेलों के प्रति उत्साह और ऊर्जा का माहौल बनाया। प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ-साथ अनुशासन, नेतृत्व, टीमवर्क, आत्मविश्वास, धैर्य और खेल भावना जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को सीखने और अनुभव करने का अवसर मिला। विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी ने विश्वविद्यालय में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और आपसी सहयोग की भावना को मजबूत किया। प्रतियोगिता ने यह संदेश भी दिया कि शिक्षा के साथ-साथ खेल विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कृषि विद्यापीठ के विद्यार्थियों का सरस डेयरी जयपुर में शैक्षणिक भ्रमण

दिनांक 29 सितंबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर की कृषि विद्यापीठ ने बीएससी कृषि (ऑनर्स) के छात्रों और फैकल्टी सदस्यों ने जयपुर स्थित सरस डेयरी प्लांट का एक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया। इस भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को दूध एकत्रित करने, गुणवत्ता जाँचने, प्रोसेसिंग, पाश्चराइजेशन, पैकेजिंग, स्टोरेज, वैल्यू एडिशन और डेयरी प्रोडक्ट्स की मार्केटिंग के बारे में व्यवहारिक जानकारी देना था। छात्रों ने डेयरी प्रोसेसिंग से जुड़ी अलग-अलग प्रक्रियाओं को देखा और आधुनिक डेयरी टेक्नोलॉजी और क्वालिटी-कंट्रोल के तरीकों को समझने के लिए सरस डेयरी के टेक्निकल स्टाफ़ ने उपयोगी जानकारी दी। इस भ्रमण से छात्रों को अपनी कक्षाओं की जानकारी को व्यवहारिक कामों से जोड़ने में मदद मिली और डेयरी प्रबंधन, खाद्य सुरक्षा, वैल्यू एडिशन और एग्रीबिज़नेस के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त हुई।





इस अवसर पर विश्विद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इंडस्ट्रियल एक्सपोज़र विज़िट से छात्रों को प्रैक्टिकल जानकारी मिलती है और इससे क्लासरूम की पढ़ाई और असल दुनिया में खेती और डेयरी सेक्टर के कामों के बीच का अंतर कम करने में मदद मिलती है। प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने मॉडर्न डेयरी प्रोसेसिंग, क्वालिटी कंट्रोल, पैकेजिंग, मार्केटिंग और वैल्यू एडिशन को समझने के महत्व पर ज़ोर दिया और छात्रों को इंडस्ट्री से जुड़ी स्किल्स और एंटरप्रेन्योर वाली सोच विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. जीपी मीणा अधिष्ठाता, कृषि विद्यापीठ ने इस भ्रमण को सीखने का एक अहम अनुभव बताया और छात्रों को डेयरी प्रबंधन, दूध की प्रोसेसिंग, साफ़-सफ़ाई, क्वालिटी एश्योरेंस, वेस्ट मैनेजमेंट और सप्लाई-चेन ऑपरेशन्स को बारीकी से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। इस भ्रमण में सभी कृषि विद्यापीठ के सदस्यों ने भाग लिया और विद्यार्थियों को डेयरी के महत्वपूर्ण उपयोग की जानकारी दी।

विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास हेतु कैरियर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

दिनांक 30 सितंबर 2026 को विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं व्यक्तित्व विकास के साथ उन्हें भविष्य में उपलब्ध विभिन्न कैरियर अवसरों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ की ओर से बुधवार को कल्पना पब्लिक विद्यालय, टूटोली में विद्यार्थी विकास एवं कैरियर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी रुचि, क्षमता एवं योग्यता के अनुरूप कैरियर के विभिन्न विकल्पों की जानकारी देना तथा उन्हें उच्च शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराणा ने कहा कि- "जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सही दिशा और उचित मार्गदर्शन आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने लक्ष्य को निर्धारित कर निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया।" विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि- "जीवन में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अच्छे मार्गदर्शन के साथ योजनाबद्ध तरीके से मेहनत करना जरूरी है।"





उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय समय-समय पर ऐसे मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों को शिक्षा एवं कैरियर के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।" मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि- "वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल शैक्षणिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को अपनी रुचि, प्रतिभा, कौशल एवं क्षमता को पहचानकर उसी के अनुरूप अपने कैरियर का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। उन्होंने समय का सदुपयोग करने, नियमित अध्ययन करने तथा निरंतर नई जानकारी और कौशल अर्जित करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया।" इस अवसर पर कल्पना पब्लिक विद्यालय, टूटोली के प्रबंधक श्री सुनील स्वामी ने विद्यार्थियों को कैरियर चयन के संबंध में मार्गदर्शन देते हुए कहा कि कैरियर का चुनाव दूसरों की देखा-देखी करने के बजाय अपनी रुचि और क्षमता को ध्यान में रखकर करना चाहिए। उन्होंने आत्मविश्वास, अनुशासन, सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास को सफलता के लिए महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम के दौरान सहायक प्रोफेसर सुश्री खुशबू चौधरी ने विद्यालय की कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों के मध्य कुछ शैक्षणिक क्विज एवं लघु प्रतियोगिताएँ भी करवाई गईं। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम के अंत में कल्पना पब्लिक विद्यालय के प्राचार्य श्री राजेन्द्र कुमार की ओर से यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर से पधारे सभी स्टाफ़ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं उपयोगी रहा।

वैज्ञानिक जिज्ञासा एवं व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देने हेतु विज्ञान प्रयोगों का प्रदर्शन

दिनांक 30 सितंबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान विद्यापीठ द्वारा 30 सितंबर 2026 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुम्हारियावास में विद्यार्थियों के लिए विज्ञान प्रयोगों के प्रदर्शन एवं विस्तार गतिविधि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालय के विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि, जिज्ञासा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना तथा उन्हें प्रयोगात्मक एवं व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ना था। कार्यक्रम का आयोजन मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान विद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. रजनी माथुर के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर भौतिक विज्ञान की सहायक आचार्य डॉ. चारु दुबे तथा रसायन विज्ञान की सहायक आचार्य सुश्री मनीषा यादव ने विद्यार्थियों को विभिन्न सरल, रोचक एवं दैनिक जीवन से संबंधित विज्ञान प्रयोगों का प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ प्रयोगों को देखा, उनमें रुचि दिखाई तथा अपनी जिज्ञासाओं से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों को "करके सीखने" का अवसर प्रदान किया।





यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि विद्यालय स्तर पर इस प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और नवाचार की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यूनिवर्सिटी के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ विश्वविद्यालय एवं विद्यालयों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना समाज एवं राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है। उन्होंने मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान विद्यालय द्वारा की गई इस पहल की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में विशेष उत्साह देखने को मिला। विज्ञान प्रयोगों के प्रत्यक्ष प्रदर्शन से विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझने के साथ-साथ उनके व्यावहारिक उपयोग को जानने का अवसर मिला। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय परिवार द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी की टीम का आभार व्यक्त किया गया। जिज्ञासा जगाएँ, युवा मस्तिष्कों को प्रेरित करें की भावना के साथ आयोजित यह गतिविधि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक चेतना, तार्किक सोच एवं व्यावहारिक ज्ञान विकसित करने की दिशा में एक सार्थक पहल रही।

सीआरई कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर के विशेष शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 3 अक्टूबर 2026 को एक दिवसीय ऑनलाइन सीआरई (Continuing Rehabilitation Education) कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कार्यक्रम समन्वयक सुश्री गीता रानी द्वारा की गई 1 कार्यक्रम का उद्देश्य विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों, विशेष शिक्षकों, पुनर्वास पेशेवरों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षताओं को नवीनतम जानकारी से समृद्ध करना था। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्रदान की गई। जिसमें डॉ. वंदना सिंह ठाकुर, अधिष्ठाता, ने विचार प्रस्तुत किये।उनके पश्चात डॉ. के लक्ष्मी नारायण, हसन दीन खान तथा डॉ. पी रामाकृष्णा, सह आचार्य, जामिया मिलिया इस्लामिया ने विषय से संबंधित जानकारी प्रदान की। ऑनलाइन माध्यम से आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से सहभागिता की तथा विषय विशेषज्ञों के साथ संवाद करते हुए अपने प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।





कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संबोधन में कहा कि सीआरई कार्यक्रम विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास के क्षेत्र में ज्ञान, कौशल और व्यावसायिक दक्षता को निरंतर विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। कार्यक्रम के इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने कहा कि विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास के क्षेत्र में निरंतर ज्ञानवर्धन और व्यावसायिक कौशल का विकास अत्यंत आवश्यक है। विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) अंकित गांधी ने कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर प्रदान करना और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के जीवन को अधिक आत्मनिर्भर एवं सम्मानजनक बनाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। इस कार्यक्रम के दौरान विशेष शिक्षा विभाग के सभी विद्यार्थी तथा सभी सहायक शिक्षकगण के रूप में श्रीमती सीमा चौधरी, श्री मनीष मीना तथा श्री धीरज कुमार नागर उपस्थित रहे।

नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित

दिनांक 5 अक्टूबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज द्वारा नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, अनुशासन, विभिन्न शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों तथा उपलब्ध सुविधाओं से परिचित कराना रहा। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत एवं परिचय के साथ हुई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन, प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना एवं अन्य गणमान्य अतिथियों ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं। स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज की अधिष्ठाता डॉ. रजनी माथुर ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में प्रवेश उनके शैक्षणिक जीवन की एक नई शुरुआत है। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन, अनुशासन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार एवं अनुसंधान के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर प्रयोगात्मक ज्ञान, कौशल विकास और व्यक्तित्व निर्माण पर भी ध्यान देना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 आधारित पाठ्यक्रम, क्रेडिट प्रणाली, आंतरिक मूल्यांकन, परीक्षा प्रक्रिया, प्रयोगशाला कार्य, मेंटर-मेंटी व्यवस्था, पुस्तकालय तथा विभिन्न छात्र गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।





इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र गोयल, सह आचार्य, भौतिक विज्ञान एवं सुश्री मनीषा यादव, सहायक आचार्य, रसायन विज्ञान ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अपने विचार साझा किए। उन्होंने विद्यार्थियों को विषय की मूलभूत समझ विकसित करने, नियमित अध्ययन करने तथा प्रयोगात्मक एवं व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रेरित किया, साथ ही, उन्होंने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उपलब्ध शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक अवसरों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा शिक्षकों से विभिन्न शैक्षणिक विषयों से संबंधित प्रश्न पूछे। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण का अधिकतम लाभ उठाने, अनुशासन बनाए रखने और अपने लक्ष्यों की दिशा में निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित किया गया।

वित्तीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 5 अक्टूबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान विद्यापीठ द्वारा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) के सहयोग से भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के तत्वावधान में विद्यार्थियों के लिए वित्तीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को बचत, निवेश, वित्तीय नियोजन तथा सुरक्षित एवं जिम्मेदार निवेश के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम की शुरुआत आईक्यूएसी समन्वयक एवं मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान विद्यापीठ की अधिष्ठाता डॉ. रजनी माथुर के स्वागत उद्बोधन से हुई। उन्होंने अतिथि एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए वित्तीय जागरूकता को वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता बताया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों को वित्तीय रूप से जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सही वित्तीय जानकारी युवाओं को भविष्य के लिए बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।





प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी एवं प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने भी अपने संदेश के माध्यम से विद्यार्थियों को वित्तीय अनुशासन, बचत की आदत तथा सोच-समझकर निवेश करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के प्रशिक्षक डॉ. गिरिश गोयल ने विद्यार्थियों को वित्तीय जागरूकता से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने निवेश के विभिन्न विकल्पों, जोखिम एवं प्रतिफल, वित्तीय नियोजन तथा निवेश करते समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रमाणित एवं विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने तथा अनधिकृत निवेश से बचने के लिए जागरूक किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में सुश्री मनीषा यादव एवं श्री जितेंद्र गोयल ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में भाग लिया तथा वित्तीय जागरूकता से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी रहा तथा उन्हें अपने भविष्य के लिए जिम्मेदार वित्तीय निर्णय लेने हेतु प्रेरित किया।

स्क्रीन के उस पार: राजस्थान के युवाओं में सामाजिक माध्यम और इंटरनेट का बढ़ता प्रभाव

भूमिका

हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जहाँ मोबाइल फोन हमारी जेब में रखा एक छोटा-सा उपकरण भर नहीं है, बल्कि वह हमारी दुनिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। सुबह आँख खुलने से लेकर रात को सोने तक समाचार, शिक्षा, मनोरंजन, बातचीत, रोजगार और सामाजिक संपर्क सब कुछ स्क्रीन पर उपलब्ध है। विशेष रूप से युवाओं के जीवन में सामाजिक माध्यम ने अभिव्यक्ति और संवाद के नए अवसर पैदा किए हैं।

राजस्थान में बदलती डिजिटल तस्वीर

राजस्थान में इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुँच तेजी से बढ़ी है। शहरों के साथ-साथ छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों के युवा भी शिक्षा, मनोरंजन और सामाजिक संपर्क के लिए इंटरनेट का व्यापक उपयोग कर रहे हैं।पश्चिमी राजस्थान के जोधपुर में महाविद्यालय विद्यार्थियों पर किए गए एक अध्ययन में 2,035 विद्यार्थियों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में 51 प्रतिशत विद्यार्थियों में इंटरनेट-आसक्ति की जाँच में सकारात्मक परिणाम मिले। इनमें 31.8 प्रतिशत हल्के, 18.5 प्रतिशत मध्यम और 0.7 प्रतिशत गंभीर स्तर की श्रेणी में थे। अध्ययन में इंटरनेट उपयोग के साथ अवसाद, चिंता, तनाव और नींद में परेशानी जैसे कारकों का भी संबंध पाया गया। यह 51 प्रतिशत आँकड़ा पूरे राजस्थान के युवाओं का प्रतिनिधि आँकड़ा नहीं है; यह जोधपुर में किए गए एक विशेष अध्ययन का परिणाम है। सामाजिक माध्यम सुविधा से आदत तक सामाजिक माध्यम का उपयोग अपने आप में समस्या नहीं है। एक विद्यार्थी यूट्यूब पर किसी विषय की कक्षा देख सकता है, कोई युवा प्रतियोगी परीक्षा की जानकारी प्राप्त कर सकता है और कोई रोजगार की सूचना खोज सकता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब उपयोग आवश्यकता से आगे बढ़कर ऐसी आदत में बदलने लगे, जिसमें व्यक्ति बार-बार बिना स्पष्ट उद्देश्य के फोन देखने लगे और अपने समय तथा दैनिक गतिविधियों पर नियंत्रण खोने लगे।

युवाओं के मानसिक संसार पर प्रभाव

सामाजिक माध्यम केवल समय नहीं लेता; कुछ परिस्थितियों में यह व्यक्ति के सोचने और स्वयं को देखने के तरीके को भी प्रभावित कर सकता है। सामाजिक तुलना: सामाजिक माध्यम पर लोग प्रायः अपने जीवन के चुनिंदा और सकारात्मक क्षण साझा करते हैं। किसी की सफलता, यात्रा, उपलब्धि या जीवनशैली देखकर युवा अनजाने में अपने जीवन की तुलना उससे करने लग सकता है।

आत्म-प्रदर्शन और ऑनलाइन मान्यता: पसंद, टिप्पणी, साझा करना और अनुयायियों की संख्या आज डिजिटल पहचान का हिस्सा बन चुके हैं। जब व्यक्ति अपने आत्म-मूल्य को लगातार ऑनलाइन प्रतिक्रिया से जोड़ने लगता है, तो सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने पर प्रसन्नता और अपेक्षित प्रतिक्रिया न मिलने पर निराशा जैसी भावनाएँ पैदा हो सकती हैं।

पढ़ाई और एकाग्रता की चुनौती

राजस्थान के युवाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा की तैयारी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसे में मोबाइल फोन एक उपयोगी शैक्षणिक साधन भी है और ध्यान भटकाने का स्रोत भी बन सकता है। एक विद्यार्थी पढ़ाई के लिए मोबाइल खोलता है और कुछ मिनट बाद उसका ध्यान किसी लघु वीडियो, सूचना-संदेश या दूसरी सामाजिक माध्यम सामग्री की ओर चला जाता है।

नींद और रात की डिजिटल दुनिया सोने से पहले लंबे समय तक मोबाइल देखने, वीडियो चलाने या सामाजिक माध्यम पर सक्रिय रहने से सोने का समय प्रभावित हो सकता है। जोधपुर के अध्ययन में इंटरनेट-आसक्ति के साथ नींद से संबंधित समस्याओं का संबंध भी पाया गया था।

ग्रामीण और शहरी राजस्थान

राजस्थान की विशेषता उसकी भौगोलिक और सामाजिक विविधता है। जयपुर जैसे बड़े शहर से लेकर डूंगरपुर, करौली, धौलपुर, बाड़मेर और अन्य जिलों के ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक डिजिटल पहुँच और उपयोग के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं। जयपुर के अध्ययन में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के इंटरनेट उपयोग तथा मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया और इंटरनेट उपयोग की गंभीरता तथा खराब मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया।

सामाजिक माध्यम का सकारात्मक पक्ष

सामाजिक माध्यम को केवल नकारात्मक दृष्टि से देखना भी उचित नहीं होगा। डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा और अवसरों तक पहुँच को आसान बनाया है। आज एक छोटे कस्बे का विद्यार्थी भी देश के किसी अच्छे शिक्षक की ऑनलाइन कक्षा देख सकता है। रोजगार, छात्रवृत्ति, प्रतियोगी परीक्षाओं और सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी भी डिजिटल माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। क्या किया जा सकता है। इस चुनौती का समाधान केवल युवाओं को मोबाइल से दूर रखने में नहीं है। आवश्यकता डिजिटल अनुशासन और डिजिटल साक्षरता विकसित करने की है।

1. **डिजिटल समय का निर्धारण :** मनोरंजन और सामाजिक माध्यम के लिए निश्चित समय निर्धारित करना।
2. **पढ़ाई के समय सूचना-संदेश सीमित करना :** महत्वपूर्ण कार्य के दौरान गैर-जरूरी सूचना-संदेश बंद रखना।
3. **रात में स्क्रीन का सीमित उपयोग :** सोने से पहले लंबे समय तक मोबाइल चलाने की आदत नियंत्रित करना।
4. **परिवार में संवाद :** अभिभावक यह समझें कि युवा मोबाइल पर क्या कर रहा है और उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है।
5. **विश्वविद्यालयों की भूमिका :** विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में डिजिटल साक्षरता, जिम्मेदार इंटरनेट उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता से जुड़े कार्यक्रम हों।
6. **समय पर सहायता :** लगातार चिंता, अत्यधिक तनाव, गंभीर नींद की समस्या या दैनिक कार्यों में परेशानी होने पर योग्य विशेषज्ञ से सहायता लेना।

डिजिटल अनुशासन ही समाधान

आज तकनीक से पूरी तरह दूर रहना न संभव है और न आवश्यक। हमें तकनीक को छोड़ना नहीं है, बल्कि उसके साथ संतुलन बनाना है। एक विद्यार्थी जो मोबाइल से ऑनलाइन पढ़ाई करता है, नौकरी की जानकारी खोजता है और परिवार से संपर्क बनाए रखता है, वह तकनीक का उपयोग अपने विकास के लिए कर रहा है।

निष्कर्ष

राजस्थान के युवाओं के जीवन में इंटरनेट और सामाजिक माध्यम की भूमिका लगातार बढ़ रही है। उपलब्ध राजस्थान-आधारित अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि अत्यधिक अथवा समस्याग्रस्त इंटरनेट उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न कारकों के बीच संबंध हो सकता है। इसलिए आवश्यकता युवाओं को डिजिटल दुनिया से दूर करने की नहीं, बल्कि उन्हें उसका विवेकपूर्ण उपयोग करना सिखाने की है। तकनीक हमारे जीवन को आसान बनाने का साधन है, उसे हमारे जीवन का स्वामी नहीं बनना चाहिए। मोबाइल हमारे हाथ में है, लेकिन क्या हमारे समय पर नियंत्रण भी हमारे ही हाथ में है?

संदर्भ

1. जोधपुर के महाविद्यालय विद्यार्थियों में इंटरनेट-आसक्ति और उससे जुड़े कारकों का अध्ययन, 2023
2. जयपुर में किशोरों के इंटरनेट उपयोग और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य से संबंधित अध्ययन, 2026
3. डूंगरपुर के आसपुर क्षेत्र में किशोरों में समस्याग्रस्त इंटरनेट उपयोग से संबंधित अध्ययन, 2022
4. सामाजिक माध्यम के उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव संबंधी मूल संदर्भ-पत्र, 2025

श्री आशुतोष जैमिनी

(सहायक लेखाकार)

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर द्वारा बाजडोली गांव में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित

दिनांक 14 अक्टूबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर द्वारा सहाय हॉस्पिटल, जयपुर एवं लॉज ज़ेवियर्स 459 जीएलआई (Lodge Xavier's 459 GLI) के सहयोग से बाजडोली गांव में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 220 लोगों ने लाभ प्राप्त किया। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को बेहतर नेत्र स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना, आंखों से संबंधित बीमारियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा जरूरतमंद लोगों को समय पर चिकित्सकीय परामर्श प्रदान करना था। शिविर के दौरान ग्रामीणों की आंखों की जांच की गई तथा जरूरतमंद लोगों को पास की नजर के चश्मे निःशुल्क वितरित किए गए। इसके अतिरिक्त, मोतियाबिंद से पीड़ित मरीजों के निःशुल्क ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में भी पहल की गई। कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की प्रेजिडेंट प्रोफेसर डॉ. रश्मि जैन, लॉज ज़ेवियर्स 459 जीएलआई से श्री अमरदीप सोनी एवं श्री पंकज जैन, सहाय हॉस्पिटल, जयपुर से श्री रामाकांत तथा वाटिका नगर पालिका की चेयरमैन श्रीमती कमल देवी उपस्थित रहीं। अतिथियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने और समाज के जरूरतमंद वर्गों तक चिकित्सा सेवाएं पहुंचाने के इस प्रयास की सराहना की।





यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराणा ने कहा कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाना सामूहिक जिम्मेदारी है। शिक्षण संस्थानों का दायित्व शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं के समाधान में योगदान देना और जरूरतमंद लोगों की सहायता करना भी है। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने कहा कि किसी भी शिक्षण संस्थान की पहचान केवल उसकी शैक्षणिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि समाज के प्रति उसके योगदान और सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वहन से भी होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने के साथ-साथ उनमें मानवीय संवेदनाएं, सेवा भावना और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करना भी है। शिविर में ग्रामीणों की आंखों की जांच कर आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श दिया गया। पास की नजर में परेशानी का सामना कर रहे जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए, जिससे उन्हें पढ़ने-लिखने और दैनिक कार्यों में सुविधा मिल सके। मोतियाबिंद से पीड़ित पाए गए मरीजों के आगे के उपचार एवं निःशुल्क ऑपरेशन की सुविधा के लिए भी पहल की गई। इस आयोजन में सहाय हॉस्पिटल, जयपुर ने चिकित्सा सेवाओं के लिए सहयोग प्रदान किया, जबकि लॉज ज़ेवियर्स 459 जीएलआई के प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में सहभागिता निभाई। वाटिका नगर पालिका की चेयरमैन श्रीमती कमल देवी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। शिविर के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सा संस्थानों और सामाजिक संगठनों के संयुक्त प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के साथ जरूरतमंद लोगों को प्रत्यक्ष लाभ पहुंचाया जा सकता है। शिविर के सफल आयोजन में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के श्री यश यादव, श्री वीरेंद्र चौधरी, श्री लतीफ, श्री हसन, श्री आशुतोष, सुश्री नीलम आदि सदस्यों ने सहयोग प्रदान किया।